C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6)

वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए। विशेष विचारों को विशेष शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, ताकि सामने वाले व्यक्ति को उसका महत्त्व समझ में आ जाए। मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे। मनुष्य की अच्छाई-बुराई अथवा उसका आचरण उसकी वाणी से पहचाना जाता है। वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतन शास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। इसीलिए बोलते समय सोच-समझकर, विचारकर के बोलना चाहिए।

1. ईश्वर ने मनुष्य को कौन-सी बड़ी देन दी है?
2. बोलते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
3. मनुष्य के विचार अर्थ-पूर्ण कब होगे?
4. मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन क्या है?
5. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x3=6

तुम कुछ न करोगे तो भी विश्व चलेगा ही,
फिर क्यों गर्वीले बन लड़ते अधिकारों को?
सो गर्व और अधिकार हे तुलना छोड़ो,
अधिकार नहीं, कर्तव्यभाव का ध्यान करो!
है तेज वही, अपने सान्निध्य मात्र से जो
सहचर-परिचर के आँसू तुरंत सुखाता है,
उस मन को हम किस भाँति वस्तुतः सु-मन कहें,
औरों को खिलता देख, न जो खिल जाता है?
काँटे दिखते हैं जबकि फूल से हटता मन,
अवगुण दिखते हैं जबकि गुणों से आँख हटे;
उस मन के भीतर दुख कहो क्यों आएगा;
जिस मन में हों आनंद और उल्लास डटे!
यह विश्व-व्यवस्था अपनी गति का लाभ उठा देखो,
व्यक्तित्व तुम्हारा यदि शुभ गति का प्रेमी हो
तो उसमें विभु का प्रेरक हाथ लगा देखो!

1. कवि अधिकारों की चिंता न करने और कर्तव्य-भाव का ध्यान करने के लिए क्यों कह रहा है?
2. 'तेज' और 'सुमन' के क्या लक्षण बताए गए हैं?
3. दुख कैसे मन के भीतर प्रवेश नहीं कर पाता और क्यों?

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त!
युग-युग शुचि, गर्वोन्नत, महान!
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड यह चिर-समाधि,
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

1. युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त शब्दों में निहित भाव को समझाइए।
2. कवि ने हिमालय को यहाँ पर 'यतिवर' क्यों कहा है? समझाइए।
3. कवि ने हिमालय की तुलना किससे की है? और वह महाशून्य में क्या खोज रहा है?

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1
तिगुना, रस्सी

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1
उपदिशा, निबंध

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1
सहचर, सत्कर्म

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1
ग्रामीण, बेलन

ड़) निम्नलिखित का समस्त पद का विग्रह बनाकर समास का नाम लिखें :3
1. सुलोचना 2. निस्संदेह 3 नवरात्र

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4
1. तुम्हारी यात्रा सफल हो।
2. छि :, ऐसा घृणित कार्य तुमने किया है।
3. तुम कौन हो?
4. संभवत: वह आज आयेगा।

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: 4
1. तरणि के ही संग तरल तरंग में तरणि डूबी थी हमारी ताल में
2. कुटिल, कालबस, कालकवलु,
करनी करह, कहि कायर, बहुबसी
3. मधुप गुनगुनाकर कह जाता (मन रूपी भँवरा)
4. सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

यहाँ तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाँति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती हैं। बहुत निम्नश्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिलकुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को

अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा-नमक दे दीजिए, वह चाय चोडी में कूटकर उसे दूधवाली चाय के रंग की बना के मिट्टी के टोटीदार बरतन (खोटी) में रख के आपको दे देगी। यदि बैठक की जगह चूल्हे से दूर है और आपको डर है कि सारा मक्खन आपकी चाय में नहीं पड़ेगा, तो आप खुद जाकर चोडी में चाय मथकर ला सकते हैं। चाय का रंग तैयार हो जाने पर फिर नमक-मक्खन डालने की जरुरत होती है।

क) उपर्युक्त गद्यांश में कहाँ की बात की जा रही है?
ख) उपर्युक्त गद्यांश में तिब्बत के बारे में क्या बताया गया है?
ग) चाय में नमक मक्खन कब डालने की जरुरत होती है?

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. लारेंस की पत्नी फ्रीदा ने ऐसा क्यों कहा होगा की "मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लारेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है?"
2. मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण -हृदय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी?
3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए -
   जिसे तुम घृणित समझते हो,उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?
4. लेखिका ने छात्रावास का परिवेश बहुभाषी किस प्रकार था?

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगै, अब उड़ि अनत न जाहिं।1।

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठी कबीरा जीम।2।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।3।

1. 'मानसरोवर' से कवि का क्या अभिप्राय है?
2. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?
3. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? वर्णन कीजिए।
2. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था?
3. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?
4. भाव स्पष्ट कीजिए - खा खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अंहकारी।

प्र. 9. डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है - मेरे संग कि औरतें पाठ के आधार पर तर्क-सहित उत्तर दीजिए। 4

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

- बेरोज़गारी
- सत्संगति

प्र. 11. छोटी बहन नक़ल करते पकड़ी गई है, उसका दुष्परिणाम बताते हुए उसे पत्र लिखें। 5

प्र. 12 विद्यार्थी और बस कंडक्टर के बीच हो रहे संवाद लिखिए। 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6)

वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए। विशेष विचारों को विशेष शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, ताकि सामने वाले व्यक्ति को उसका महत्त्व समझ में आ जाए। मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे। मनुष्य की अच्छाई-बुराई अथवा उसका आचरण उसकी वाणी से पहचाना जाता है। वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतन शास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। इसीलिए बोलते समय सोच-समझकर, विचारकर के बोलना चाहिए।

1. ईश्वर ने मनुष्य को कौन-सी बड़ी देन दी है?

   उत्तर : वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है।

2. बोलते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

   उत्तर : वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए।

3. मनुष्य के विचार अर्थ-पूर्ण कब होगे?

   उत्तर : मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे।

4. मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन क्या है?

   उत्तर : वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतन शास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

5. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए?

   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए 'वाणी का सदुपयोग' उचित शीर्षक है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x3=6

तुम कुछ न करोगे तो भी विश्व चलेगा ही,
फिर क्यों गर्वीले बन लड़ते अधिकारों को?
सो गर्व और अधिकार हे तुलना छोड़ो,
अधिकार नहीं, कर्तव्यभाव का ध्यान करो!
है तेज वही, अपने सान्निध्य मात्र से जो
सहचर-परिचर के आँसू तुरंत सुखाता है,
उस मन को हम किस भाँति वस्तुतः सु-मन कहें,
औरों को खिलता देख, न जो खिल जाता है?
काँटे दिखते हैं जबकि फूल से हटता मन,
अवगुण दिखते हैं जबकि गुणों से आँख हटे;
उस मन के भीतर दुख कहो क्यों आएगा;
जिस मन में हों आनंद और उल्लास डटे!
यह विश्व-व्यवस्था अपनी गति का लाभ उठा देखो,
व्यक्तित्व तुम्हारा यदि शुभ गति का प्रेमी हो
तो उसमें विभु का प्रेरक हाथ लगा देखो!

1. कवि अधिकारों की चिंता न करने और कर्तव्य-भाव का ध्यान करने के लिए क्यों कह रहा है?

   उत्तर : कवि कहता है कि यदि एक व्यक्ति कुछ न करे तो भी विश्व तो चलता ही रहेगा फिर अपने घमण्ड में अधिकारों के लिए क्यों लड़ना अगर कुछ पाना है तो कर्तव्य भाव रखो अधिकारों की लड़ाई छोड़ों।

2. 'तेज' और 'सुमन' के क्या लक्षण बताए गए हैं?

   उत्तर : तेजवही सही होता है जिसके पास आने मात्र से अपनों के दुःख दूर हो जाते हैं अर्थात् आसूँ सूख जाते हैं और सुमन जो खुद खिले औरों को भी खिलने दे अर्थात् अपना मन सुंदर स्वच्छ रखे।

3. दुख कैसे मन के भीतर प्रवेश नहीं कर पाता और क्यों?

उत्तर : यदि मन में ख़ुशी हो उल्लास हो तो उस मन में दुःख कभी प्रवेश नहीं कर पाता।

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त!
युग-युग शुचि, गर्वोन्नत, महान!
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड यह चिर-समाधि,
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

1. युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त शब्दों में निहित भाव को समझाइए।

उत्तर : कवि के द्वारा हिमालय के लिए उपर्युक्त विशेषणों का प्रयोग किया गया है। इन विशेषणों का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि आज तक कोई भी शत्रु इसे जीत नहीं पाया है हिमालय हमेशा से स्वतंत्र, अजेय और बंधन मुक्त रहा है।

2. कवि ने हिमालय को यहाँ पर 'यतिवर' क्यों कहा है? समझाइए।

उत्तर : कवि ने हिमालय को यतिवर इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार एक यतिवर अर्थात् तपस्वी अपने ध्यान में लीन रहता है ठीक उसी प्रकार सदियों से हिमालय की स्थिरता और अटूटता को देखकर हमें हिमालय यतिवर जैसा ही दिखता है।

3. कवि ने हिमालय की तुलना किससे की है? और वह महाशून्य में क्या खोज रहा है?

उत्तर : कवि ने हिमालय की तुलना तपस्या में लीन एक तपस्वी से की है। जिस प्रकार एक तपस्वी किसी समस्या का समाधान हेतु तपस्या में लीन रहता है ठीक उसी प्रकार हिमालय भी न जाने कौन-सी समस्या के समाधान हेतु समाधि लगाए बैठा है। ऐसी कौन-सी समस्या है कि जिस हेतु हिमालय इतनी कठिन साधना कर रहा है।

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1

तिगुना, रस्सी

उत्तर : गुना, ई

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1

उपदिशा, निबंध

उत्तर : उप, नि

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1

सहचर, सत्कर्म

उत्तर : सह+चर, सत्+कर्म

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

ग्रामीण, बेलन

उत्तर : ग्राम+ईन, बेल + न

ड़) निम्नलिखित का समस्त पद का विग्रह बनाकर समास का नाम लिखें :3

1. सुलोचना 2. निस्संदेह 3 नवरात्र

समस्त पद	विग्रह	समास

सुलोचना	सुंदर है लोचन जिसके अर्थात् मेघनाद की पत्नी	बहुब्रीहि
निस्संदेह	संदेह के बिना	अव्ययीभाव
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह	द्विगु

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4

1. तुम्हारी यात्रा सफल हो।
   उत्तर : इच्छार्थक वाक्य
2. छि :, ऐसा घृणित कार्य तुमने किया है।
   उत्तर : विस्मयादिबोधक वाक्य
3. तुम कौन हो?
   उत्तर : प्रश्नवाचक वाक्य
4. संभवत: वह आज आयेगा।
   उत्तर : संदेहार्थक वाक्य

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: 4

1. तरणि के ही संग तरल तरंग में तरणि डूबी थी हमारी ताल में
   उत्तर : यमक अलंकार
2. कुटिल, कालबस, कालकवलु,
   करनी करह, कहि कायर, बहुबसी
   उत्तर : अनुप्रास अलंकार
3. मधुप गुनगुनाकर कह जाता (मन रूपी भँवरा)
   उत्तर : रूपक अलंकार
4. सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का
   उत्तर : मानवीयकरण अलंकार

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

यहाँ तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाँति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती हैं। बहुत निम्नश्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिलकुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा-नमक दे दीजिए, वह चाय चोडी में कूटकर उसे दूधवाली चाय के रंग की बना के मिट्टी के टोटीदार बरतन (खोटी) में रख के आपको दे देगी। यदि बैठक की जगह चूल्हे से दूर है और आपको डर है कि सारा मक्खन आपकी चाय में नहीं पड़ेगा, तो आप खुद जाकर चोडी में चाय मथकर ला सकते हैं। चाय का रंग तैयार हो जाने पर फिर नमक-मक्खन डालने की जरुरत होती है।

क) उपर्युक्त गद्यांश में कहाँ की बात की जा रही है?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश में तिब्बत की बात की जा रही है।

ख) उपर्युक्त गद्यांश में तिब्बत के बारे में क्या बताया गया है?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश में तिब्बत के बारे में यह बताया गया है कि तिब्बत में जाति-पाँति, छुआछूत को नहीं मानते हैं यहाँ तक कि औरतें परदा भी नहीं करती हैं। बहुत निम्नश्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिलकुल अपरिचित हों। घर की स्त्रियाँ आपको बेझिझक चाय बना कर दे देती हैं।

ग) चाय में नमक मक्खन कब डालने की जरुरत होती है?

उत्तर : चाय का रंग तैयार हो जाने पर फिर नमक-मक्खन डालने की जरुरत होती है।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. लारेंस की पत्नी फ्रीदा ने ऐसा क्यों कहा होगा की "मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लारेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है?"

   उत्तर : लारेंस की पत्नी फ्रीदा जानती थी की लारेंस को गौरैया से बहुत प्रेम था। वे अपना काफी समय गौरैया के साथ बिताते थे। गौरैया भी उनके साथ अन्तरंग साथी जैसा व्यवहार करती थी। उनके इसी पक्षी-प्रेम को उदघाटित करने के लिए उन्होंने यह वाक्य कहा।

2. मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण -हृदय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी?

   उत्तर : मैना महल के ढेर पर बैठकर जी भर कर रो लेना चाहती थी पर पाषाण - हृदय जनरल अउटरम ने उसकी यह इच्छा पूरी न होने दी। जनरल अउटरम के मन में भय रहा होगा कि अगर उसने नाना साहब की बेटी के प्रति ज़रा भी सहानुभूति दिखाई तो ब्रिटिश सरकार का गुस्सा उस पर फूट पड़ेगा। उसे इसके लिए दंड भी मिल सकता है। क्रोध से पागल सामान्य, अंग्रेज़ नागरिक भी उस पर नाराज़गी प्रकट करेंगे। इस कारण उसने मैना की यह छोटी-सी इच्छा भी पूरी न होने दी।

3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए -

   जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

उत्तर : प्रेमचंद ने सामाजिक बुराइयों को अपनाना तो दूर उनकी तरफ देखा भी नहीं। प्रेमचंद गलत वस्तु या व्यक्ति को हाथ से नहीं पैर से ही सम्बोधित करना उचित समझते है।।

4. लेखिका ने छात्रावास का परिवेश बहुभाषी किस प्रकार था?

उत्तर : लेखिका ने क्रास्थवेट गल्स कॉलेज में पाँचवीं में प्रवेश लिया। यहाँ देश के विभिन्न भागों से छात्राएँ पढ़ने आती थीं। वहाँ पर ये छात्राएँ अपनी-अपनी मातृ भाषा में बातें करती थीं। वहाँ हिंदी, मराठी, अवधी, बुंदेली और ब्रजभाषा आदि भाषाएँ सुनने मिलती थी। सब हिंदी और उर्दू का अध्ययन करती थीं। इस प्रकार छात्रावास का परिवेश बहुभाषी था।

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं ।
मुकताफल मुकता चुगै, अब उड़ि अनत न जाहिं।1।

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठी कबीरा जीम।2।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।3।

1. 'मानसरोवर' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : मानसरोवर से कवि का अभिप्राय है - मनरूपी पवित्र सरोवर, जिसमें स्वच्छ विचारधारा रूपी जल भरा है तथा हंस रूपी जीवात्मा प्रभु भक्ति में लीन होकर मुक्तिरूपी मुक्ताफल चुगते हैं।

2. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?

उत्तर : हिन्दू अपने ईश्वर को मंदिर तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में ढूँढता है तो मुस्लिम अपने अल्लाह को काबे या मस्जिद में और मनुष्य ईश्वर को योग, वैराग्य तथा अनेक प्रकार की धार्मिक क्रियाओं में खोजता फिरता है।

3. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

उत्तर : तीसरे दोहे में कवि ने अनुभव से प्राप्त ज्ञान को महत्त्व दिया है।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? वर्णन कीजिए।

उत्तर : सखी गोपी से कृष्ण का मोहक रूप धारण करने का आग्रह करती है। सखी गोपी से वही सब कुछ धारण करने के लिए कहती है जो कृष्ण धारण करते हैं, सखी ने गोपी से आग्रह किया था कि वह कृष्ण के समान सिर पर मोरपंखों का मुकुट धारण करें। गले में गुंजों की माला पहने। तन पर पीले वस्त्र पहने। हाथों में लाठी थामे वन में गायों को चराने जाए।

2. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था?

उत्तर : दक्षिण दिशा का कोई ओर-छोर नहीं होता हम यह नहीं कह सकते कि इस निश्चित स्थान पर दक्षिण दिशा समाप्त हो गई है। यहाँ पर कवि ने दक्षिण दिशा को एक प्रतीक के रूप में शोषण से जोड़ा है कि शोषण का भी कोई ओर-छोर नहीं होता। इससे हम बच नहीं सकते हैं। इसलिए कवि ने ऐसा कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था।

3. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर : बच्चे समाज का भविष्य, आईना और देश की प्रगति का एक अहम् हिस्सा होते हैं। यदि समाज के इस सबसे महत्त्वपूर्ण अंग को यदि आप उचित देखभाल और अवसर प्रदान नहीं करेगें तो समाज प्रगति कैसे करेगा। सभी बच्चे एक समान होते हैं, उन्हें उनके बचपन से वंचित रखना अपने आप में घोर अपराध तथा अमानवीय कर्म है। इसलिए बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान है।

4. भाव स्पष्ट कीजिए - खा खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अंहकारी।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति के लिए मध्यम मार्ग अपनाने को कह रही है। कवयित्री कहती है कि मनुष्य को भोग विलास में पड़कर कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है। मनुष्य जब सांसारिक भोगों को पूरी तरह से त्याग देता है तब उसके मन में अंहकार की भावना पैदा हो जाती है। अत: भोग-त्याग, सुख-दुःख के मध्य का मार्ग अपनाने की बात यहाँ पर कवयित्री कर रही है।

प्र. 9. डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है - मेरे संग कि औरतें पाठ के आधार पर तर्क-सहित उत्तर दीजिए। 4

उत्तर : डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है। यह बात हमें लेखिका की माता द्वारा चोर के पकड़े जाने पर उसके साथ किए गए व्यवहार से पता चलता है। चोर के पकड़े जाने पर लेखिका की माँ ने न तो चोर को पकड़ा, न पिटवाया, बल्कि उससे सेवा ली और अपना पुत्र बना लिया। उसके पकड़े जाने पर उसने उसे उपदेश भी नहीं दिया। उसने इतना ही कहा - अब तुम्हारी मर्जी - चाहे

चोरी करो या खेती। उसकी इस सहज भावना से चोर का ह्रदय परिवर्तित हो गया। उसने सदा के लिए चोरी छोड़ दी और खेती को अपना लिया। यदि शायद वे चोर के साथ बुरा बर्ताव या मारपीट करती तो चोर सुधरने के बजाए और भी गलत रास्ते पर चल पड़ता।

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

बेरोज़गारी

देश में बेरोज़गारी का बढ़ना एक बहुत बड़ी समस्या है। यह समस्या नवयुवकों के लिए निराशा का विषय बनी हुई है। हमारी अधिकांश जनसंख्या बेरोजगारी के कारण भूखे पेट सोने और शिक्षा विहिन रहने के लिए विवश है। उसके पास किसी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। भारत एक विशाल जनसंख्या वाला राष्ट्र है। जनसंख्या जितनी तेजी से विकास कर रही है, व्यक्तियों का आर्थिक स्तर और रोजगार के अवसर उतनी ही तेज गति से गिरते जा रहे है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह संभव नहीं है कि वह इतनी बड़ी जनसंख्या को रोजगार दिलवा सके। भारत में बढ़ती बेरोजगारी को बड़े पैमाने पर व्याप्त अशिक्षा और भ्रष्टाचार समान रूप से बल प्रदान कर रहे हैं। औद्योगीकरण ने भी बेरोज़गारी के स्तर को हमारे देश में बढ़ाया है। बेरोज़गारी के कारण देश में आपराधिक वारदातों से संबंधित आंकड़ा भी दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। सरकार द्वारा इस समस्या को दूर करने के लिए अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

सत्संगति

सत्संगति अर्थात अच्छों आचरण वाले लोगों की संगति। मनुष्य की संगति ही उसके व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करती है। इसी लिए प्राचीन समय से धर्मग्रंथ तथा संत लोग मनुष्य को सत्संगति के लिए प्रेरित करते आए हैं।

कबीर तन पंछी भया, जहां मन तहां उडी जाइ।
जो जैसी संगती कर, सो तैसा ही फल पाइ।।

यह सच है कि मनुष्य जिन लोगों के साथ उठता बैठता है उनके स्वभाव और गुणों का उन पर प्रभाव पड़ता है। संत के साथ रहकर मानव कल्याण की बात और चोर के साथ रहकर चोरी जैसे अवगुण की बात सीखने मिलती है। अच्छी संगति हमारे अंदर के संत को और बुरी संगति हमारे अंदर के दानव को जागृत करती है। सत्संगति मनुष्य एवं समाज के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। सत्संगति मनुष्य को समाज में आदर पात्र बनाती है। सत्संगति मनुष्य के व्यक्तित्व और जीवन को सुंदर तथा प्रगतिशील बना देती है। दुर्जन का साथ पग-पग पर हानि पहुँचाता है।

प्र. 11. छोटी बहन नक़ल करते पकड़ी गई है, उसका दुष्परिणाम बताते हुए उसे पत्र लिखें। 5

सेंट थॉमस छात्रावास
कमरा 234
पुणे
दिनाँक - 25 सितम्बर 2013
प्रिय दीक्षा
स्नेहाशीष

कल ही पिताजी का पत्र मिला पढ़कर तो जैसे मेरे ऊपर तुषारापात ही हो गया कि तुम परीक्षा में नक़ल करते पकड़ी गई हो। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है कि हमारी दीक्षा भी ऐसा काम कर सकती है। बहन यह ऐसा दाग है जो मिटाए नहीं मिटता, परंतु अब जो हो गया सो हो गया पिछली बातों को भूल कर नहीं शुरुआत करो तथा मन भटकाने वाले मित्रों से दूर रहो।

आशा करता हूँ कि तुम इस गलती से सबक लेकर अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करोगी। अपना ख्याल रखना।

तुम्हारा अग्रज
मोहित

प्र. 12 विद्यार्थी और बस कंडक्टर के बीच हो रहे संवाद लिखिए। 5

कंडक्टर : टिकिट टिकिट..

विद्यार्थी : १ अभिनव कॉलेज स्टॉप

कंडक्टर : १० रु.

विद्यार्थी : मैं तो रोज ८ रु. में जाता हूँ।

कंडक्टर : हाँ! जाते होगे परंतु आज से भाव बढ़ गया।

विद्यार्थी : क्या बात कर रहे हैं? तीन महीने पहले ही तो ६ रु. से बढ़कर ८ रु. हुआ था।

कंडक्टर : अब हम क्या करे? महंगाई बढ़ती है और सरकार दाम बढ़ाती है।

विद्यार्थी : हाँ महंगाई बढ़ती है इसका भुगतान जनता को ही करना पड़ता है।

कंडक्टर : क्या करे?

विद्यार्थी : हमें सरकार से बार-बार टिकट के दाम बढ़ाने को लेकर शिकायत करनी चाहिए।

कंडक्टर : हमारा तो काम है यह, आप बाबू लोग देखों।

विद्यार्थी : ठीक है, हम ही कुछ करेंगे।